

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में धार्मिक युग बोध

डॉ. जे सेन्दायरै

असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सीतालक्ष्मी रामस्वामी महाविद्यालय, तमिलनाडु, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2025.11.4.12241>

सारांश

प्राचीन भारत में धर्म की विशालता उसकी भावनात्मक एकता का रूप, विभिन्न धर्मों के संघर्ष और मान्यताएं, धर्म से प्रेरित देश की राजनीति और समाज का रूप नागर के सभी उपन्यासों में द्रष्टव्य हैं। नागर के उपन्यासों में धर्म सम्बन्धी जो व्याख्याएं दिए हैं, वे लोककल्याणकारी रही हैं। धर्म की विकृति पर न केवल कठोर प्रहार करते हैं बल्कि उसे जागरूक चेतना द्वारा कल्याणकारी कार्यों से युक्त कर स्वस्थ दृष्टिकोण प्रदान करना चाहते हैं। हिन्दू धर्म के विभिन्न मत मतांतरों का समन्वय करके उसे एक प्रकार से पुष्ट रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न नागरजी ने अपने उपन्यासों में किया है।

मूल शब्द: अमृतलालनागर, धर्म, लोककल्याणकारी, मानवतावादी, चुनौती

धर्म आरम्भ में सामाजिक व्यवस्था का विधान करने वाला माध्यम था। बाद में धर्म का अर्थ एक अदृश्य ब्रह्म से लिया जाने लगा और जब धर्म का सम्बन्ध बाह्य आडम्बारों और वर्ग विशेष के स्वार्थ साधन से जुड़ा तभी उसके विरुद्ध आन्दोलन हुए। बौद्ध धर्म ने ब्रह्मण प्रभुता को नकारा और उसने अपने संघ में भूद्र, अछूत, दास एवं अबलाओं को भारण दी। मध्य युग में संतों का धार्मिक आन्दोलन भी सामाजिक वर्ण व्यवस्था को चुनौती देकर मानवतावादी समाज की स्थापना के सन्दर्भ में था।

अमृतलाल नागर प्रेमचन्दोत्तर युग के बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न कथाकार हैं। उनका एवं उनके उपन्यास साहित्य का हिन्दी जगत् में असाधारण महत्त्व हैं। उन्होंने भारत के स्वाधीनता पूर्व और तत्पश्चात् के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को समग्रता में अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है।

अमृतलाल नागर धर्म को लोकहित में देखते हैं। लोकसिद्ध धर्म को मानते हैं। इसलिए धर्म की आड में फैली आडम्बारों का वे खुल कर विरोध करते हैं। बूढ़ और समुद्र उपन्यास की ताई के द्वारा धर्म के नाम पर टोने टोटके, जादू मन्त्र आदि का विरोध कर अपनी धर्म सम्बन्धी मान्यता को स्पष्ट करते हैं। अमृतलाल नागर मूलतः धार्मिक व्यक्ति थे। वे धर्म को व्यक्तिगत आस्था की वस्तु मानते थे। इसलिए वे कई बार आडम्बर और पाखण्डों के विरोध में जमकर बरसते हैं।

धर्म की आड में घुस आए आडम्बर एवं पाखण्ड जनता के दैनंदिन जीवन को भी प्रभावित करते हैं। इस प्रकार एक ओर तो धर्म अघोगामी होता है तथा दूसरी ओर जनता ईश्वर के नाम पर इस प्रकार के पाखण्डों में फसकर अपना और अपने समाज का अहित करती हैं। अपने समस्त उपन्यासों में नागर इन कुश्रितियों का विरोध करते हैं। नागर के अनुसार धर्म.....

अनाचारी आततायी भासक से संतस्त निरिह प्रजा की सुरक्षा के हेतु किया जानेवाला आक्रमण ही धर्म है।

धर्म के इस लोकहितकारी स्वरूप को नागर ने प्रतिष्ठा प्रदान की है। एकदा नैमिशारण्य उपन्यास में नैमिशारण्य से उठा भक्ति आन्दोलन लोकहितकारी था। मानस का हंस के गोस्वामी भी लोकधर्मी रामचरित मानस का सृजन करते हैं वह आज के युग में उतना ही प्रासंगिक है, जितना पहले था। वर्णाश्रम धर्म को मानने वाले तुलसी अत्याचारी ब्रह्मण के बारे में यह कहने में नहीं चूकते कि

मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र ने भी ब्रह्मण रावण को मारा था। असुरधर्मी अपना वर्ण खो देता है। पापी सदा दण्ड के योग्य है।

मानव मात्र की एकता में विश्वास करना ही सच्ची आस्था है। यही लोककल्याण का आधार है। यह आस्था और जिजीविशा, उच्च मानवीय मूल्यों पर आधारित हैं।

प्रागैतिहासिक काल से सम्बन्धित नागर का उपन्यास एकदा नैमिशारण्य में चित्रित तदयुगीन धार्मिक परिवेश अपने विशाल फलक में अभिव्यक्त हुआ है। धर्म के क्षेत्र में बाह्याडम्बरों तथा अधविवासों ने अधिकार जमा लिया था। कुछ लोग यज्ञों को ही सर्वस्व मानकर दिनरात यज्ञ करते थे तो कुछ लोग यज्ञ को अपव्यय का साधन मानते थे। ईसा पूर्वकालीन दक्षिण भारत की धार्मिक परिस्थितियों का वर्णन नागर जी ने सुहाग के नूपुर उपन्यास में किया है। कावेरी तट पर विभिन्न वर्गों की रसलीलाओं, ब्राह्मणों, बौद्धों आदि के स्वस्ति वाचन एवं भिक्षुओं के समूह का चित्रण हमें यथार्थ रूप में यहाँ मिलता है।

गदर के फूल उपन्यास में नागर ने ईसा के प्रारम्भिक भाताब्दियों के बाद की धार्मिक परिस्थितियों का सिंहावलोकन किया है। मानस का हंस और खंजन नयन दोनों ही उपन्यासों में कथानायक धर्म प्राण महात्मा हैं। उनकी धार्मिक निष्ठा और दृष्टि तत्कालीन धार्मिक परिस्थितियों के अनवरत घात प्रतिघात से परिपुष्ट हुई हैं। दोनों कथानायकों के कार्य की धार्मिक परिस्थितियों अनेक स्तरों पर समान थी। सन् 1152 में मुहम्मद गोरी द्वारा स्थापित इस्लामी सत्ता मुगल भासन की अन्तिम संख्या तक इस्लाम धर्म के प्रचार प्रसार पर बल देती रही है, सिकन्दर लोदी से लेकर जहांगीर के भासन काल तक की परिस्थितियाँ धार्मिक दृष्टि से अनेक रूपों में समान रही हैं। वैसे सिकन्दर लोदी का भासन काल धर्म की दृष्टि से अत्यन्त अराजकतापूर्ण और दमनकारी था। हिन्दू धर्म भावना को कूचल देने के लिए अत्यन्त क्रूर व्यवहार किए गये थे। खंजन नयन के कथानायक सूरदास का प्रारम्भिक जीवन इसी धार्मिक वातावरण में बीता था।

हिन्दू धर्म के आन्तरिक विश्रुखलन का उदाहरण मानस का हंस में बार बार प्रस्तुत किया गया है। अयोध्या के पवित्र मन्दिरों और मठों में फैला भ्रष्टाचार, साधु सन्यासी व्यक्तियों की चरित्रहीनता, मठाधीशों की विलासिता, धर्म व्यवस्थाधियों की धर्महीनता, पाखण्डियों की लोकप्रियता और मूल्य धार्मिक चरित्रवान सज्जनों की उपेक्षा और अवमानना का जीवन्त चित्रण जहाँ मानस का हंस उपन्यास में हुआ है वहाँ खंजन नयन में धर्म के क्षेत्र में व्याप्त व्यावसायिक प्रवृत्ति, पाखण्ड और प्रदर्शनप्रियता, मानवीय मूल्यों में अनारस्था, स्वार्थपरकता, कलहकारिणी ईर्ष्या और नैतिक मूल्यों की अनुपस्थिति के कारण आचरणमूलक हिन्दू धर्म निष्ठा खोखली हो

गई थी। नागर ने इस कृति में अनेक स्थलो पर इन धार्मिक विकृतियों का संकेत दिया है।

बीसवी भाती का न केवल सर्वतोमुखी परिवेश अमृत और विश में मिलता है बल्कि इस भाती की धार्मिक परिस्थितिया भी अनायास प्राप्त हो जाती हैं। वैसे बीसवी भाती जो एक ओर बौद्धिक दृष्टि से विकास की ऊँची से ऊँची शिखरावलियों का चुम्बन कर रही है दूसरी ओर घोर अंधविश्वास से जकड़ी हुई है। लखनऊ जैसे भाहर में यह अंधविश्वास किसी कदर कम नहीं है। पुतिगुरु का पूजा पाठ, रुद्धसिंह एवं मधुर जी का कीर्तन, ज्योतिशियों द्वारा घोषित अष्टाग्रही योग आदि का अच्छा चित्रण हुआ है।

स्वातंत्रता के बाद कई हिन्दू मुस्लिम दंगे हुए हैं नागर ने अमृत और विश में सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि हिन्दू मुसलमान के द्रोह का मूल कारण धार्मिक या साम्प्रदायिक न हो कर चन्द स्वार्थी तत्वों की क्षुद्र अतृप्त विलासिता है। पीढियाँ उपन्यास में भी नागर ने धार्मिक विश्वास का चित्रण किया है।

प्राचीन भारत में धर्म की विशालता उसकी भावनात्मक एकता का रूप, विभिन्न धर्मों के संघर्ष और मान्यताएँ, धर्म से प्रेरित देश की राजनीति और समाज का रूप नागर के सभी उपन्यासों में द्रष्टव्य हैं। नागर के उपन्यासों में धर्म सम्बन्धी जो व्याख्याएँ दिए हैं, वे लोककल्याणकारी रही हैं। धर्म की विकृति पर न केवल कठोर प्रहार करते हैं बल्कि उसे जागरूप चेतना द्वारा कल्याणकारी कार्यों से युक्त कर स्वस्थ दृष्टिकोण प्रदान करना चाहते हैं। हिन्दू धर्म के विभिन्न मत मतांतरों का समन्वय करके उसे एक प्रकार से पुष्ट रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न नागरजी ने अपने उपन्यासों में किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, डॉ. भोभा पालिपाल लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद
2. अमृतलाल नागर व्यक्तित्व, कृतित्व, एवं सिद्धांत, डॉ. सुदेश बत्रा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली